بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-15.04.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत आयशा रज़ो. फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. की कठिनाईयाँ यदि पर्वतों पर टूटतीं तो व धरती में समा जात परन्तु आप रज़ी. को रसूलों जैसा धैर्य प्रदान किया गया।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ः राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 15 अप्रैल 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि पिछले से पहले ख़ुत्बः जुम्अः में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. का इस्लाम से फिरे हुए लोगों के विरुद्ध की जाने वाली गतिविधियों का वर्णन हो रहा था। विभिन्न संदर्भों के प्रकाश में यह साबित होता है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने इस्लाम से विमुख लोगों को उनकी विमुखता के कारण नहीं बल्कि उनके विद्रोह तथा युद्ध के कारण दंड दिया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस विमुखता को दुष्टता एवं विद्रोह ही कहा है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद इस्लाम तथा मुसलमानों पर कठिनाईयाँ टूट पड़ीं, अनेक पाखंडी इस्लाम से विमुख हो गए। झूठ घड़ने वाले एक दल ने नबुव्वत का दावा कर दिया। मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ लगभग एक लाख मूर्ख एवं दुष्ट लोग मिल गए और फ़ितने भड़क उठे। मोमिनों पर एक भारी भूचाल आ गया। ऐसे समय पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ख़लीफ़ः बनाए गए।

हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाती हैं कि जब मेरे वालिद ख़लीफ़ः बनाए गए तो आरम्भ में ही आप रज़ी. को हर प्रकार से उपद्रवों के तूफ़ान तथा नबी होने के झूठे दावेदारों की गतिविधियों तथा पाखंडी एवं मुर्तद लोगों की बग़ावत को देखा और आप रज़ी. पर इतनी कठिनाईयाँ आईं कि यदि वे पहाड़ों पर टूटतीं तो धरती में धंस जाते किन्तु आप रज़ी. को रसूलों वाला संतोष प्रदान किया गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि-

यहाँ तक कि अल्लाह की सहायता आ पहुंची। झूठे नबियों की हत्या तथा मुर्तदों का वध कर दिया गया, फ़ितने दूर कर दिए गए, अल्लाह ने मोमिनों को आफ़त से बचा कर उनकी भय की स्थिति को शांति से बदल दिया, दीन को स्थाइत्व प्रदान किया तथा एक जहान को हक़ पर स्थापित कर दिया, दुष्टों के मुंह काले कर दिए तथा अपना वादा पूरा किया। इस कठिनाई के बाद मोमिनों के दिल रौशन तथा चेहरे खिल उठे। वे आप रज़ी. को एक मुबारक अस्तित्व तथा नबियों की तरह समर्थन प्राप्त समझते थे और यह सब कुछ हज़रत अबू बकर रज़ी. की सच्चाई तथा दृढ़ विश्वास के कारण था।

विद्रोहियों का विनाश करने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ी. ने सेना को विभाजित किया तथा ग्यारह सेनापतियों को इस्लाम के झंडे देकर विभिन्न क्षेत्रों में सीमाओं पर भेजा। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. को तुलैहा बिन ख़ुवैलिद और बताह मालिक बिन नवेरा से, हज़रत इकरिमा रज़ी. बिन अबू जहल को मुसैलमा से, हज़रत मुहाजिर बिन अबू उमय्या रज़ी. को अन्सी की सेनाओं, क़ैस बिन मक़शूह और कन्दा से, हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ी. को हमक़तीन में, हज़रत उमरू बिन आस रज़ी. को कज़ाअः वदीअः तथा हारिस के समूहों से, हज़रत तरीफ़ा बिन हाजिज़ रज़ी. को बनू सलीम और हवाज़िन से, हज़रत सुवेद बिन मक़रन रज़ी. को तिहामा में तथा हज़रत अला बिन हदरमी रज़ी. को बहरीन में विद्रोहियों से मुक़ाबले का आदेश दिया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हर एक दल के अमीर को आदेश दिया कि जहाँ जहाँ से जाएँ वहाँ के शक्ति शाली मुसलमानों को अपने साथ लें तथा कुछ सशक्त लोगों को वहीं अपने इलाक़े की सुरक्षा के लिए पीछे छोड़ दें।

हज़रत अबू बकर रज़ी. के इस विभाजन का वर्णन करते हुए एक लेखक लिखत हैं कि इन अभियानों के लिए जुल्क़सा नामक स्थान को सेना का केन्द्र बनाया गया। यहाँ से संगठित इस्लामी सेनाएँ विमुखता के उपद्रव को कुचलने के लिए विभिन्न इलाक़ों की ओर रवाना हुईं। दलों के विभाजन तथा उनके लिए उपयुक्त सीमाओं के निर्धारण से यह स्पष्ट होता है कि अबू बकर रज़ी. भूगोल का गहरा ज्ञान रखते थे तथा मानव बस्तियों एवं अरब महाद्वीप के रास्तों से भली भांति परिचित थे। सेनाओं के साथ सम्पर्क भी अत्यंत सुदृढ़ था, सभी सेनाएँ आपस के सम्पक में थीं तथा यह ख़िलाफ़त की महत्त्व पूर्ण सफलताओं में से था क्यूँकि इन सेनाओं के अन्दर नेतृत्व की निपुणता के साथ संगठन कौशल भी मौजूद था। इस्लाम से विमुख लोग अपने अपने क्षेत्रों में फैले हुए थे तथा यह समझते थे कि कुछ महीनों में समस्त मुसलमानों का सफ़ाया कर देंगे। इसी लिए अबू बकर रज़ी. ने चाहा कि सहसा उनकी शान एवं प्रतिष्ठा का सफ़ाया किया जाए तथा उनका फ़ितना बढ़ने से पहले ही उनकी ख़बर ली तथा उन्हें इस बात का अवसर न दिया कि अपना सिर उठा सकें तथा मुसलमानों का कष्ट दे सकें।

हज़रत अबू बकर रज़ी. की ओर से नेतृत्व की नियुक्ति के संदर्भ में विभिन्न बातों का वर्णन करते हुए एक अन्य लेखक डा.अली मुहम्मद सलाबी लिखते हैं कि सिद्दीक़ अकबर रज़ी. ने मदीना राजधानी की सुरक्षा के लिए सेना का एक भाग अपने पास रखा तथा इसी प्रकार शासनीय व्यवस्था के विषय में विचार विमर्श के लिए सीनियर सहाबियों की एक जमाअत अपने पास रखी। सेनापतियों को आदेश दिया कि इस्लाम से विमुख होने वाले प्रभावित क्षेत्रों में मौजूद मुसलमान जो शक्ति एवं प्रभाव वाले हैं उनको अपने साथ शामिल कर लें तथा इन क्षेत्रों की रक्षा हेतु कुछ लोगों को वहाँ नियुक्त कर दें। मुर्तदों के साथ युद्ध करते हुए अबू बकर रज़ी. ने दो निर्देश पत्र भी लिख थे। पहला अरब क़बीलों के नाम तथा दूसरा सेनापतियों के निर्देश के लिए। हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी सिर्रुल ख़िलाफ़ः नामक पुस्तक में अरब क़बीलों के नाम लिखे जाने वाले पत्र का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि उचित होगा कि हम यहाँ वे पत्र लिख दें (ताकि) इस पत्र पर सूचना पाने वाले सिद्दीक़ अकबर रज़ी. के शआयरल्लाह (आराधना) का प्रचलन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलहि वसल्लम की समस्त सुन्नतों के बचाव में मज़बूती को देख कर ईमान और विवेक में प्रगति करें।

यह पत्र अबू बकर ख़लीफ़तुर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से प्रत्येक छोटे बड़े के लिए है .. अम्मा बाद, स्पष्ट हो कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने पास से हक़ देकर अपने प्राणियों की ओर मुबश्शिर व नज़ीर (ख़ुश ख़बरी तथा चेतावनी देने वाला) तथा अल्लाह की ओर से उसके आदेशानुसार बुलाने वाले तथा एक प्रकाशमय कर देने वाले सूर्य के रूप में भेजा ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे डराएँ जो जीवित हो तथा काफ़िरों पर इस आदेश की पुष्टि हो जाए। अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को हक़ के साथ हिदायत दी जिसने आप स. को क़बूल किया और जिसने आप स. से पीठ फेर ली उससे आप स. ने उस समय तक युद्ध किया कि वह मजबूर एवं विवश होकर इस्लाम में आ गया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए फिर इसके पश्चात कि आप स. ने अल्लाह क आदेश को जारी फ़रमा लिया और उम्मत की शुभचिंता कर ली और जो दायित्व आप स. पर था उसे पूरा कर लिया और अल्लाह ने आप स. पर तथा अह्ले इस्लाम पर अपनी इस किताब में जो उसने नाज़िल फ़रमाई इस बात को ख़ूब खोल कर बयान कर दिया .. मैं तुम्हें अल्लाह के तक़्वा की तथा तुम्हारी इस तक़दीर तथा भाग्य को प्राप्त करने की, जो अल्लाह के हाँ तुम्हारे लिए निश्चित है तथा वह शिक्षा जो तुम्हारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारे पास लेकर आया, उसके अनुसार कर्म करने का तुमसे अनुरोध करता हूँ तथा यह कि आप स. के मार्ग दर्शन से सत्यमार्ग धारण करो तथा अल्लाह के दीन को मज़बूती से पकड़े रखो, क्यूँकि प्रत्येक वह व्यक्ति जिसे वह न बचाए, वह परीक्षा में पड़ कर परखा जाएगा तथा प्रत्येक वह व्यक्ति जिसकी वह सहायता न करे, वह असहाय एवं मित्र हीन है। अतः अल्लाह जिसे हिदायत दे दे, वही हिदायत पाने वाला है तथा जिसे वह गुमराह कर दे, वह गुमराह है .. तथा उसका दुनिया में किया हुआ कोई कार्य उस समय तक स्वीकार नहीं किया जाएगा जब तक वह इस दीने इस्लाम का इक़रार न कर ले तथा न ही आख़िरत में उसकी आर से कोई क्षतिपूर्ति तथा बदला स्वीकार किया जाएगा तथा मुझ तक यह बात पहुंची है कि तुममें से कुछ लोगों ने इस्लाम का इक़रार करने तथा इसके अनुसार कर्म करने के बाद अल्लाह तआला का धोखा देते हुए तथा उसके मामले में मूर्खता से काम लेते हुए और शैतान की बात मानते हुए अपने दीन से विमुखता धारण कर ली है .. और मैंने मुहाजिर तथा अन्सार तथा सुन्दर रूप से अनुसरण करने वाले ताबेईन (अनुयायी) की सेना पर अमुक व्यक्ति को नियुक्त करके तुम्हारी ओर भेजा है और मैंने उसे आदेश दिया है कि वह न तो किसी से युद्ध करे तथा न उसे उस समय तक मारे जब तक वह अल्लाह के पैग़ाम की ओर बुला न ले, फिर जो इस सन्देश को स्वीकार कर ले तथा इक़रार कर ले और दुष्टता से रुक जाए और नेक कर्म करे तो उससे क़बूल करे तथा इस पर उसकी सहायता करे और जिसने इंकार किया तो मैंने उसे आदेश दिया है कि वह उससे इस बात पर युद्ध करे और जिस पर क़ाबू पाए उनमें से किसी एक को भी जीवित न रहने दे तथा या वह उन्हें आग से जला डाले तथा हर तरीक़े से उनकी हत्या करे तथा महिलाओं और बच्चों को बन्दी बना ले तथा किसी से इस्लाम से कम कोई चीज़ क़बूल न करे। फिर जो उसका अनुसरण करे तो यह उसके लिए अच्छा है तथा जिसने उसे

छोड़ा तो वह अल्लाह को विवश नहीं कर सकेगा और मैंने अपने सन्देश वाहक को आदेश दिया है कि वह मेरे इस पत्र को तुम्हारे हर समूह में पढ़ कर सुना दे और अज़ान ही इस्लाम का ऐलान है। अतः जब मुसलमान अज़ान दें तो वे भी अज़ान दे दें, और उन पर हमले से रुक जाएँ तथा यदि वे अज़ान न दें तो उन पर तुरन्त हमला करो और जब वे अज़ान दे दें तो जो उन पर कर्त्तव्य हैं उनसे पूरा कराओ तथा यदि वे इंकार करें तो उनपर तुरन्त हमला करो तथा यदि वे इक़रार कर लें तो उनसे क़बूल कर लिया जाए।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने दूसरा पत्र सेना के ग्यारह सेनापतियों के नाम लिखा तथा प्रत्येक अमीर को कड़ा आदेश दिया कि वे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष हर एक मामले में अल्लाह का तक़्वा धारण करें। जहाँ तक उसका सामर्थ्य है तथा उसको अल्लाह के मामले में संघर्ष का तथा लोगों के साथ जिहाद का आदेश दिया है। जिन्होंने अल्लाह से पीठ फेर ली तथा इस्लाम की ओर पलटते हुए शैतानी अभिलाषाओं को धारण कर लिया, सबसे पहले उनको अन्तिम सीमा तक समझाएं तथा उन्हें इस्लाम की ओर दावत दें। यदि वे इसको क़बूल कर लें तो उन लोगों से लड़ाई से रुक जाएं तथा यदि वे इसको क़बूल न करें तो उन पर तुरन्त हमला करे यहाँ तक कि उसके सामने झुक जाएँ। फिर वह उन लोगों को उनके अधिकार तथा कर्त्तव्य से अवगत करे तथा वह उनसे वसूल करे जो उन पर फ़र्ज़ है और उन्हें दे जो उनके अधिकार हैं। जिसने इंकार किया तो उससे लड़ाई की जाए। यदि अल्लाह इसे उन पर विजय प्रदान करे तो उनको बुरी तरह शस्त्रों एवं आग के द्वारा वध किया जाए।

डा.अली मुहम्मद सलाबी साहब लिखते हैं कि इस पत्र में यह वर्णन है कि इस्लाम से फिरे हुए विद्रोहियों को आग में जला दिया जाए, किसी को जलाने का दंड देना तो उचित नहीं है, आग क द्वारा यातना देना केवल अल्लाह का काम है किन्तु यहाँ उन्हें जलाने का आदेश इस लिए दिया गया है कि उन बदमाशों ने अह्ले ईमान के साथ यही व्यवहार किया था इस लिए यह क़िसास के रूप में था।

अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ में भी यही फ़रमाया है कि जैसा कोई करता है उसको उसी के अनुसार बदला लेने के लिए सज़ा दो। बाग़ियों ने मुसलमानों को जलाने तथा उन्हें घोर अत्याचार से वध करने का अपराध किया था इस लिए हज़रत अबू बकर रज़ी. उसी तरह उनकी हत्या करने तथा उनके साथ व्यवहार करने का आदेश दिया था जैसा उन्होंने मुसलमानों के साथ किया था।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि यह वर्णन आगे भी इन्शाअल्लाह बयान होगा, रमज़ान में शायद दूसरे ख़ुत्बे भी बीच में आते रहें, हो सकता है समय लग जाए किन्तु अतएव जो भी ख़ुत्बः आगे इस पर आएगा उसमें विस्तार पूर्वक बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131